कक्षा में राजकुमार

रुक्मिणी बैनर्जी

लखनऊ *से थोड़ी ही दूर, बख़्शी का तालाब ब्लॉक के एक सरकारी प्राथमिक स्कूल में यह दोपहर का समय है। दूसरी कक्षा का कमरा बच्चों से ठसाठस भरा है। इस इलाक़े के अन्य स्कूलों की तरह ही इस स्कूल की छोटी कक्षाओं में बच्चों की भीड़ है। दरअसल, उनमें से कम-से-कम आधे तो दूसरी कक्षा के लिए कुछ ज़्यादा ही छोटे दिखते हैं। हम भाषा की पाठ्यपुस्तक की पढ़ाई में व्यस्त हैं। पाठ लम्बा है। हम पहले पैराग्राफ़ से शुरू करते हैं। सिवाय दो-एक बच्चों के, अन्य कोई कुछ पंक्तियों को भी प्रवाहपूर्ण ढंग से नहीं पढ़ पाता।*
हमारे पाठ का नाम सिद्धार्थ है।

उत्तर प्रदेश, कक्षा-2 पाठ्य पुस्तक
पाठ : सिद्धार्थ और हंस, पेज नं. 71

सवेरे का समय था। चिड़ियाँ पेड़ों पर चहचहा रही थीं। रंग-बिरंगे फूल खिले थे। राजकुमार सिद्धार्थ बाग में टहल रहे थे। अचानक एक हंस ऊपर से गिरा। वे लपक कर उसके पास गए। हंस को तीर लगा था। सिद्धार्थ ने तीर को धीरे-धीरे निकाला। घाव को पानी से धोया। हंस अपने बचाने वाले को एकटक देख रहा था।

"यह एक कठिन नाम है। क्या तुम सब इसे दोहरा सकते हो?"
कक्षा ज़ोर-ज़ोर से बार-बार 'सिद्धार्थ' कहने लगती है। यह नाम उनकी जबानों से कई अलग-अलग ढंग से निकलता है। कुछ समय बीतने के बाद भी कुछ बच्चों को एक के बाद एक आने वाली 'द' और 'ध' आवाज़ों के साथ दिक़्क़त हो रही है। राजकुमार का नाम जोश के साथ फिर-फिर पुकारे जाने से कक्षा की हवा गुँजायमान है। लगता है कि बच्चों को अपने मुँह में इस शब्द की ध्वनि से खेलते हुए मज़ा आ रहा है।

"राजकुमार सिद्धार्थ बाग़ में टहल रहे थे।" "टहल रहे थे" का क्या मतलब है? मैं पूछती हूँ। इस पर काफ़ी बहस होती है। क्या 'टहलना' वैसा ही था जैसा चलना, या यह कुछ और था? क्या हर कोई 'टहलना' कर सकता है? एक लड़के ने अन्तिम बात कही। उसके अनुसार 'टहलना' क्या है, इसके बारे में बात करने से इसे करके दिखाना कहीं ज़्यादा आसान था। कक्षा उसके लिए कुछ जगह खाली करती है। लड़का अपना पेट बाहर को निकालता है, अपना सिर थोड़ा पीछे की ओर झुकाता है। फिर वह अपने हाथों को बहुत धीरे-धीरे डुलाते हुए आराम से आगे की ओर बढ़ता है। "अच्छा,'' कक्षा में पीछे बैठी एक लड़की कहती है 'टहलना' तब होता है जब आप एक मोटे आदमी हैं और सड़क पर चले जा रहे हैं।''

मैं कहानी पढ़ने लगती हूँ और बच्चे ध्यानपूर्वक सुनते हैं। कक्षा के अधिकांश बच्चों के लिए, पाठ ज़रूरत से ज़्यादा लम्बा और मुश्किल है। उन्हें पढ़ना सीखने के लिए इससे सरल और

छोटे ऐसे पाठ्यांशों की ज़रूरत है जो उनकी सीखने की यात्रा के लिए सहारे का काम करें। उन्हें ज़रूरत है ढेर सारी रंगबिरंगी तस्वीरों से भरी छोटी-छोटी कहानी की किताबों की। उन्हें ज़रूरत है छपे हुए शब्द की उनके नज़दीक आकर जीवन्त हो जाने की, उन्हें ज़रूरत है ज़ोर से पढ़कर सुनाए जाने की। उन्हें ज़रूरत है उसके बारे में बात करने और सोचने की, जो पढ़ा जा रहा है। पढ़ने की इच्छा और क्षमता ऐसे वातावरण में बढ़ती है जिसमें बच्चों के चारों ओर पढ़ना, लिखना, बातचीत करना और चर्चा करना चल रहा हो।

ग्रामीण लखनऊ के ये बच्चे एक चुनौती पेश करते हैं। यह चुनौती सिर्फ़ मेरे या मेरी कक्षा के लिए ही नहीं बल्कि देश के एक छोर से दूसरे छोर तक फैले इसी प्रकार के बीसियों स्कूलों के लिए है।

बख़्शी का तालाब जैसी जगहों के अनेक बच्चों और उनके परिवारों के लिए स्कूल एक नई चीज़ है। स्कूल एक औपचारिक जगह होती है : वहाँ समय के उपयोग और लोगों के बीच पारस्परिक व्यवहार के बारे में क़ायदे-क़ानून होते हैं। ये नियम और व्यवहार उनसे भिन्न होते हैं जो घर पर या उनके अपने समुदाय में होते हैं। 'स्कूल' की एक औपचारिक भाषा और अभिव्यक्ति की एक शैली होती है। यह उससे फ़र्क़ होती है जैसी वे बच्चे घर पर या स्कूल के बाहर बोलते हैं, या व्यवहार करते हैं। पाठ्यपुस्तकें कक्षा में होने वाली गतिविधियों का मार्गदर्शन करती हैं। सभी लघु परीक्षाएँ और परीक्षाएँ कक्षा में 'पढ़ाई' जाने वाली किताबों में दी गई बातों पर आधारित होती हैं। 'घर' से 'स्कूल' तथा सामान्य 'जीवन' से 'पढ़ाई' का यह भेद बच्चों और उनके माता-पिता के मन में ऐसी धारणा पैदा करता है कि बच्चों को वही ज्ञान हासिल करना है जो 'किताबी ज्ञान' के रूप में स्कूल में प्रदान किया जाता है। जब बच्चे बड़े होते हैं और ऊँची कक्षाओं में जाते हैं तो इस धारणा के दूरगामी परिणाम होते हैं। इस धारणा को जल्दी खण्डित करना ज़रूरी है। किताबों की चर्चाओं के साथ-साथ कई बुनियादी महत्त्वपूर्ण दृष्टियों से बच्चों को अपने ढंग से अपने मुहावरे में बात करने देना और इस तरह कक्षा में जो घटता है उसका सम्बन्ध बाहर जो होता है उससे जोड़ने में उन्हें सक्षम बनाना बहुत महत्त्वपूर्ण गतिविधियाँ हैं। इनसे बच्चों को यह समझने में मदद मिलती है कि स्कूल और घर एक़दम अलग-थलग नहीं हैं।

हमारी पाठ्यपुस्तकें और यहाँ तक कि कहानी की किताबें भी सामान्यतया मुख्यधारा की भाषा में या राज्य की मानक भाषा में होती हैं। पर अक्सर सामाजिक रूप से पिछड़े समुदायों से आने वाले बच्चों की भाषाई पृष्ठभूमि (बोलियों, शब्दावली और विन्यास की दृष्टियों से) भिन्न होती है। ऐसे बच्चों को स्कूल से जोड़ने वाले पुलों की ज़रूरत है। उनके और उनके परिवारों के लिए न केवल उनका स्कूल आना एक नई बात होती है, बल्कि अक्सर तो जिस नई दुनिया में वे आ पहुँचते हैं उसमें ठीक से स्थापित होने के लिए उन्हें एक नई भाषा की भी आवश्यकता पड़ती है। ज्ञात से अज्ञात की इस यात्रा का दिशानिर्देशन काफ़ी सावधानी से किए जाने की ज़रूरत होती है। इस पूरे दौर में, जब वह घर से स्कूल की दुनिया और फिर मुख्यधारा की

मानक भाषा की दुनिया की ओर बढ़ता है, बच्चे के भाषाई विकास की ज़िम्मेदारी कक्षा 1 तथा 2 के शिक्षकों की होती है।

हमारी प्राथमिक स्कूल व्यवस्था कई मान्यताओं के आधार पर बनाई गई है-
मान्यता 1 : बच्चे छह साल की उम्र में स्कूल जाना शुरू करते हैं।
मान्यता 2 : बच्चे नियमित रूप से स्कूल जाते हैं।
मान्यता 3 : हर साल उन्हें जितना सीखना है, वे वाक़ई में उतना सीख जाते हैं। आने वाले हर नए साल में शिक्षक उस कक्षा के लिए निर्धारित पाठ्यपुस्तक के पहले अध्याय से प्रारम्भ करता है। यह माना जाता है कि सीखने की प्रक्रिया में बच्चे रैखिक ढंग से प्रगति करते हैं। हर साल उस कक्षा विशेष के लिए नियत विषयवस्तु और सामग्री को पूरा पढ़ाया जाना रहता है। हर साल सीखने की दृष्टि से बच्चे के ज्ञान संसार में बहुत-सा 'मूल्यवान ज्ञान' जुड़ता जाता है।

इनमें से प्रत्येक मान्यता अधिकांश भारत के लिए, विशेष रूप से सरकारी स्कूलों के बच्चों के लिए, सही नहीं है। कई बच्चे छह साल से पहले ही स्कूल आना शुरू कर देते हैं और कई उसके काफ़ी बाद स्कूल में प्रवेश करते हैं।[1] उपस्थिति के आँकड़े भी पूरे देश में बदलते रहते हैं। यह कहना अनुचित नहीं होगा कि उत्तर भारत के कई राज्यों में प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों की उपस्थिति अनियमित होती है। इसलिए उनके एक कक्षा से दूसरी में बढ़ने की निरन्तरता के प्रति भी आश्वस्त नहीं हुआ जा सकता। भारत के प्राथमिक स्कूलों में जाने वाले आधे बच्चों की माताएँ खुद कभी स्कूल नहीं गई होतीं; इसे देखते हुए परिवार में पढ़ाई सम्बन्धी कोई मदद मिलने का कतई भरोसा नहीं किया जा सकता। अक्सर तो किसी को पता ही नहीं होता कि कब कोई बच्चा पढ़ाई में पिछड़ गया है और कितना पिछड़ गया है, या कि उसने प्रारम्भिक कक्षाओं में कुछ बुनियादी ज्ञान हासिल किया भी है या नहीं। शिक्षा सत्र के दौरान 'कोर्स' या पाठ्यपुस्तकों की सामग्री को पूरा करने की मजबूरी शिक्षकों को धकेलती रहती है।[2]

लेकिन उन बच्चों का क्या होता है जो पर्याप्त प्रगति नहीं कर पाते? हमारी स्कूल व्यवस्था में पिछड़ जाने वाले बच्चों के लिए कोई ऐसे अन्तर्निहित सुधारात्मक ढाँचे नहीं हैं जो उन बच्चों को पहचानें, उनकी समस्याओं को चिन्हित करें और उनकी मदद करने के लिए उपाय करें। कक्षा 1 से आगे बढ़ते ही पाठ्यपुस्तकों की गति काफ़ी तेज होने लगती है, नतीजतन कक्षा 2 के बाद से अनेक बच्चे बहुत पीछे छूटने लगते हैं।

पिछले एक दशक से *प्रथम* ने अनेक राज्यों में शासकीय स्कूल तंत्रों और ग्रामीण समुदायों के साथ काम किया है। हमें लगता है कि प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ने की प्रक्रियाओं को तेज़ करने के लिए संगठित कार्यवाही की जाने की ज़रूरत है, ताकि कमज़ोर बच्चों को आगे बढ़कर अपने

[1] राज्यों के लिये आयु-कक्षा तालिकाओं के लिये एएसईआर 2008 की रिपोर्ट देखें (www.asercentre.org)
[2] शिक्षा के अधिकार के प्रस्तावित कानून का वर्तमान मसौदा इस मुद्दे को यह कहकर रेखांकित करता है कि पूरा पाठ्यक्रम एक निर्धारित समय के भीतर पूरा किया जाना चाहिए।

साथियों के साथ क़दम मिलाकर चलने का एक चुनौतीपूर्ण अवसर मिल सके। और इस तरह प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकीकरण के द्वार वाक़ई में उनके लिए खुल जाएँ। पढ़ना सीखना शिक्षा के लिए पहला और सबसे आवश्यक क़दम है। धाराप्रवाह ढंग से पढ़ने में सक्षम हुए बिना कोई बच्चा किसी भी स्कूल या शैक्षिक कार्यक्रम में आगे नहीं बढ़ सकता। इसी प्रकार बुनियादी अंकगणित में ठोस आधार के बिना भी बच्चों के लिए स्कूल में आगे बढ़ना सम्भव नहीं है। उनके सीखने को मज़बूती और रफ़्तार देने के लिए स्कूल के भीतर और बाहर, दोनों जगह बड़े पैमाने पर सघन प्रयास किए जाने की ज़रूरत है, ताकि भारत के बच्चे शिक्षा के प्राथमिक चरणों में संतोषजनक और सतत प्रगति कर सकें।

प्रथम के वर्तमान *रीड इण्डिया* (भारत पढ़े) अभियान का लक्ष्य है 2010 तक सभी भारतीय बच्चे प्रवाहपूर्वक पढ़ने लगें और आत्मविश्वासपूर्वक बुनियादी अंकगणित करने लगें। राज्य सरकारों और ग्रामसभाओं के सहयोग से, वर्तमान में यह अभियान 300 से अधिक ग्रामीण जिलों में सक्रिय है। बच्चों के सीखने को मज़बूती प्रदान करने के लिए मौजूदा संसाधनों को उत्प्रेरित करना और शैक्षिक ढाँचों को ऊर्जावान बनाना इस अभियान का उद्देश्य है। हमारी आशा है कि बच्चे अपेक्षित स्तर से भी आगे दूर तक जाएँगे।

रीड इण्डिया अभियान के प्रमुख तत्व सीधे-सरल हैं : पहला, बुनियादी सीखना सुनिश्चित करने पर ध्यान देने के लिए प्रतिदिन समय देना ज़रूरी है। इसके लिए छुट्टियों में भी समय निकाला जाना आवश्यक है। उदाहरण : स्कूल में प्रतिदिन एक 'वाचन का पीरियड' होना, और गर्मियों के महीनों में समुदाय के बीच वाचन के लिए प्रतिदिन एक समय तय करना। दूसरा, बच्चों को पढ़ने और सीखने के लिए उपयुक्त सामग्री की निरन्तर आपूर्ति किया जाना ज़रूरी है। तीसरा, वयस्कों को बच्चों के साथ काम करने की ज़रूरत है; ये वयस्क आमतौर पर शिक्षक तथा गाँव के स्वेच्छा से आगे आए लोग होते हैं। इन वयस्कों को प्रशिक्षण और बच्चों के साथ काम करने के दौरान ज़मीनी सहयोग प्रदान किया जाता है। चौथा, लक्ष्यों की ओर बच्चों की प्रगति पर लगातार नज़र रखने की ज़रूरत है ताकि काम की प्रक्रिया और दिशा में ज़रूरी सुधार किए जा सकें।

अभियान के सघन चरण के बाद, अगले चार-छह महीनों के लिए उसकी अनुवर्ती योजना बनाया जाना बहुत महत्त्वपूर्ण है ताकि बच्चों के सुधरे हुए वाचन और अंकगणित के स्तरों को, और उनकी रुचि को बनाए रखा जा सके। अभियान की वास्तविक प्रक्रिया एक़दम सीधी और स्पष्ट है। हमने उसे "कमाल" (कम्बाइण्ड एक्टिविटीज़ फॉर मैक्सिमाइज़्ड लर्निंग - अधिकतम सीखने के लिए संयुक्त गतिविधियाँ) नाम दिया है। इन बच्चों के साथ कुछ इस तरह की गतिविधियाँ की जाती हैं।

कहानी सुनाना : यह छोटे बच्चों का मन लगाने वाला एक मज़ेदार तरीक़ा है। कहानी सुनाने से बच्चों को पात्रों, कथानकों, और घटनाओं से परिचित होने में, तथा ये कहानी में किस तरह

एक सूत्र में बन्धे रहते हैं, इसका बोध होने में सहायता मिलती है। बच्चों के पढ़ना सीखने के भी पहले कहानी के प्रवाह का बोध विकसित होना उनके लिए एक महत्त्वपूर्ण क़दम होता है।

ज़ोर से पढ़ना : बच्चों को ज़ोर से पढ़कर कुछ सुनाना "वाचन" को जीवन्त बनाने के सबसे अच्छे तरीक़ों में से एक है। वाचन का "नमूना" पेश करना महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इससे बच्चे यह प्रत्यक्ष अनुभव कर सकते हैं कि "अच्छे से पढ़ने" का क्या मतलब है। स्पष्ट उच्चारणों के साथ पढ़े जा रहे हर शब्द के नीचे उँगली रखते जाने से बच्चों को शब्द की आवाज़ से उसके दिखाई देने वाले स्वरूप का सम्बन्ध जोड़ने में, और साथ-ही-साथ उसे कहानी के समग्र सन्दर्भ से जोड़ने में मदद मिलती है।

यदि शिक्षक और बच्चों के पास उसी किताब की प्रतियाँ हों और वे साथ-साथ उसे पढ़ें तो यह सबसे अच्छा रहता है। बच्चों के लिए शिक्षक जैसा बनने की, और वह जो करता है उसे करने की इच्छा करना बहुत स्वाभाविक बात है। इसलिए बच्चों का नक़ल की तरह "झूठमूठ" का वाचन करते दिखाई देना कोई असमान्य बात नहीं है। वास्तविक पढ़ने की ओर बढ़ने में यह पहला महत्त्वपूर्ण क़दम है।

चर्चाएँ और बातचीत : बच्चों को जो कहानियाँ कक्षा में सुनाई गई हैं, या उन्होंने सुनी हैं, उनके बारे में उनमें आपस में बातचीत और चर्चाओं को प्रोत्साहित करने से पाठ/कहानी को वास्तविक जीवन से, और उनके स्वयं के अनुभव से जोड़ने में मदद मिलती है। 'बात करना' आसान नहीं है। कई अध्यापक बच्चों को आपस में बात करने के काबिल बनाने के बजाय उन्हें सिर्फ़ भाषण के ढंग से 'सम्बोधित' करते हैं। बातचीत करने वाली गतिविधियों का ढाँचा तैयार करने के लिए नियोजन और अभ्यास की ज़रूरत होती है। मौखिक अभिव्यक्ति के अवसर इस तरह निर्मित किए जाना चाहिए कि सभी बच्चे उनमें भाग ले सकें। इससे समग्र बोध और जानकारी की समझ मजबूत बनती है।

चित्र बनाना और घसीटकर लिखना : छोटी उम्र से बच्चों को पैंसिल को कागज पर घसीटकर स्वयं को अभिव्यक्त करने को प्रोत्साहित करने से लेखन-पूर्व के कौशल निर्मित करने में सहायता मिलती है। शुरू में बच्चे ऐसे आकार और आकृतियाँ बनाएँगे जो शायद आसानी से पहचानी नहीं जा सकतीं। लेकिन किसी बच्चे से यह पूछने का छोटा-सा उपाय करने से कि "यह क्या है?" उसे सोचने व व्यक्त करने में मदद मिलती है। वयस्क सहायक बस उसे चित्र के आगे लिखकर दे सकता है। समय के बीतने के साथ वे ज़्यादा पहचाने जा सकने वाले और सुनी या पढ़ी गई कहानी से ज़्यादा जुड़े हुए चित्र बनाने लगते हैं। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हर बच्चे की अभिव्यक्ति उसकी अपनी हो, और किसी की नक़ल न हो, तथा हर चित्र के साथ ही, वह क्या है, इसके बारे में बच्चे और बड़े व्यक्ति के बीच में चर्चा भी हो।

कूटानुवाद (प्रतीकों का अर्थ समझना) : अक्षरों और शब्दों के खेल, ध्वनियों को लिपि चिन्हों से जोड़ने के बुनियादी कौशलों को निर्मित करने का एक आसान तरीक़ा होते हैं। ऐसे कई खेल

हैं जो अक्षरों के कार्डों और वर्णमाला के चार्टों की मदद से मौखिक रूप से खेले जा सकते हैं। कूटानुवाद करना या ध्वनि-चिन्ह सम्बन्धों को अपने आप समझने लगना पढ़ना सीखने का और ज्ञात तथा अज्ञात पाठ्यांशों से निपट पाने का आत्मविश्वास हासिल करने की प्रक्रिया का एक अतिमहत्त्वपूर्ण अंग है।

पुस्तकालय और वाचनकक्ष - पुस्तकों तक पहुँच : पुस्तकों में रुचि बनाए रखने के लिए आयु के अनुरूप, नाना प्रकार की, अच्छे चित्रों से सजी किताबों और पाठ्यसामग्री तक बच्चों की पहुँच को सुगम बनाना निहायत ज़रूरी है ताकि बच्चे किसी भी समय आसानी से और आज़ादी से ऐसी सामग्री को देख सकें।

प्रारम्भिक कक्षाओं में भाषाई विकास की चुनौती यही है कि पूरे वर्ष के लिए कक्षा की ऐसे प्रभावपूर्ण गतिविधियों को कैसे रचा जाए जो उपरोक्त सभी बुनियादी तत्वों को समेकित ढंग से समाहित करती हों।

बच्चों को बात करने और काग़ज़ पर अपने को व्यक्त करने के विविध प्रकार के अवसर भी बार-बार मिलना चाहिए। यह लिखने और पढ़ने के लिए उनकी पूर्व तैयारी करवाते हैं। भाषा के समग्र विकास के लिए इन गतिविधियों को मिलेजुले रूप में करना कारगर होता है : 'करो-कहो-पढ़ो-लिखो'। इन गतिविधियों के ऐसे गठजोड़ - जैसे हर शब्द के नीचे उँगली रखते हुए उसे ज़ोर से पढ़ना, पढ़े जा रहे पाठ्यांश पर चर्चा करना, आम शब्दों को पकड़ना, उन्हें लिखना, कहानी पर आधारित तस्वीरें बनाना - ये सभी मिलकर बातचीत करने, पढ़ने और लिखने के लिए मज़बूत आधार तैयार करते हैं।

बच्चे व्यक्तिगत रूप से सीखते हैं। पर वे समूहों में भी अच्छे से सीखते हैं। कभी-कभी उन्हें चीज़ों को खुद करके आजमाने के लिए सामग्री और अवसर भी दिए जाना ज़रूरी है। और कभी उनके सक्रिय बने रहने के लिए ढाँचों की ज़रूरत होती है। आज के छोटे बच्चों के रूपान्तरित होकर आत्मविश्वास से भरे कल के योग्य जिज्ञासु वक्ता, पाठक, लेखक और विद्यार्थी बनने में इन सब गतिविधियों का दूरगामी प्रभाव होता है।

क्या बड़े पैमाने पर तेज़ी से परिवर्तन हो सकता है? पिछले कुछ वर्षों में हमें कई बड़े राज्यों, जैसे मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, हिमाचल प्रदेश और महाराष्ट्र में पढ़ने के बुनियादी स्तरों में उल्लेखनीय परिवर्तन दिखाई देते हैं।[3] ये महत्त्वपूर्ण और बड़े परिवर्तन कई कारकों का परिणाम हैं : सीखने के सघन और स्पष्ट लक्ष्य, सरकार के भीतर दृढ़ नेतृत्व, इन लक्ष्यों को हासिल करने के लिए शिक्षकों के प्रशिक्षण और उन्हें दिए जाने वाले क्षेत्र-सहयोग में तालमेल, तथा गाँव के स्तर पर पढ़ने के अभियान को सहयोग देने के लिए लोगों की बड़ी संख्या में भागीदारी। यदि कुछ राज्य थोड़े ही समय में पढ़ने के बुनियादी स्तरों में बड़े बदलाव ला सकते हैं, तो इससे हमें पता चलता है कि हमारे मौजूदा सीमित संसाधनों के साथ भी यह सम्भव है।

[3] 2005 से 2008 तक की एएसईआर की रिपोर्टें देखें। सभी रिपोर्टें www.asercentre.org पर उपलब्ध हैं।

हमारी कक्षा में हम सिद्धार्थ की कहानी के अगले पैराग्राफ पर पहुँच गए हैं। मैं पहले ज़ोर से पैराग्राफ़ को पढ़ती हूँ। फिर मैं पैराग्राफ़ को दोबारा हर शब्द के नीचे अपनी उँगली रखते हुए पढ़ती हूँ। कक्षा देख सकती है कि मैं क्या कर रही हूँ। यहाँ भी कुछ कठिन शब्द हैं। हम उन्हें बोलकर देखते हैं। हम उसके बारे में बात करते हैं जो मैंने अभी पढ़ा है। हमारी कहानी में देवदत्त आ गया है। वह सिद्धार्थ से कहता है कि हंस उसका है क्योंकि उसने तीर मारकर हंस को जमीन पर गिराया। कहानी के देवदत्त और सिद्धार्थ की ही तरह मेरी कक्षा के बच्चे भी बहस करते हैं कि वह हंस किसका है। मैं उनकी बातें ध्यान से सुनती हूँ। फिर मैं पैराग्राफ़ को फिर से ज़ोर से पढ़ती हूँ। बच्चे सुनते हैं और अपनी पाठ्यपुस्तकों में वाक्यों के साथ-साथ आगे बढ़ते हैं। मेरे पढ़ने के साथ-साथ पेज़ पर उनकी उँगलियाँ भी एक-एक शब्द पर आगे खिसकती हैं। "मेरे जैसा कौन पढ़ेगा?", मैं पूछती हूँ। एक छोटा बच्चा आगे आकर कक्षा के सामने आ जाता है, और अपनी किताब खोलकर उठाए हुए उसे पढ़ता है। आधे समय वह पढ़ता है और आधे समय पढ़ने का स्वांग करता है, पर उसका प्रयास प्रशंसनीय है। एक-एक करके बच्चे आगे आते हैं और पढ़ने का प्रयास करते हैं। हमारा दिन का काम समाप्त होता है। सब अपने बस्तों में अपनी चीज़ें रखते हैं और जाने की तैयारी करते हैं। जब मैं स्कूल के प्रांगण से बाहर जाते हुए बच्चों को देखती हूँ तो कई बच्चे हाथों में धनुष-बाण लिए होने का और आकाश में अदृश्य हंसों पर निशाना लगाने का अभिनय कर रहे हैं। और कुछ अन्य बच्चे, जैसा हमने पढ़ा था, बगीचे में राजकुमार सिद्धार्थ की ही तरह टहल रहे हैं।

रुक्मिणी बैनर्जी 1996 से प्रथम के साथ हैं (www.pratham.org)। वे ए.एस.ई.आर. सेन्टर की निदेशक भी हैं (www.asercentre.org)। उनसे इस ई-मेल पते पर सम्पर्क किया जा सकता है: rukmini.banerji@gmail.com

यह *Learning Curve, Issue XIII (Language Learning),* अक्टूबर, 2009 में प्रकाशित लेख The Prince in the Classroom का हिन्दी अनुवाद है।

अनुवाद : सत्येन्द्र त्रिपाठी **पुनरीक्षण एवं सम्पादन :** राजेश उत्साही